❶

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

आर्यसमाज सार्द्ध शताब्दी अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन, दिल्ली

प्रत्येक आर्यजन का पंजीकरण अनिवार्य

महासम्मेलन में भाग लेने वाले आर्यजन कृपया पंजीकरण हेतु लॉगइन करें-

www.aryamahasammenan.com

पंजीकरण सम्बन्धी आवश्यक निर्देश पृष्ठ 7 पर प्रकाशित किए गए हैं।

वर्ष 48, अंक 44 एक प्रति : 5 रुपये

सोमवार 25 अगस्त, 2025 से रविवार 31 अगस्त, 2025

विक्रमी सम्वत् 2082 सृष्टि सम्वत् 1960853126

दयानन्दाब्द : 202 पृष्ठ : 8

वार्षिक शुल्क : 250 रुपये दूरभाष: 23360150

ई-मेल : aryasabha@yahoo.com

इंटरनेट पर पढ़ें - www.thearyasamaj.org/aryasandesh

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जयन्ती एवं 150वें आर्यसमाज स्थापना वर्ष के आयोजनों का समापन

आर्यसमाज सार्द्ध शताब्दी अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन

30-31 अक्तूबर एवं 1-2 नवम्बर, 2025

स्वर्ण जयन्ती पार्क, रोहिणी, सैक्टर-10, दिल्ली-110085

विश्वभर के आर्यजनों में अपार उत्साह : स्थान-स्थान से पहुंचने की सूचनाएं

विभिन्न प्रतिष्ठित महानुभावों, संन्यासियों, विद्वानों, दानदाताओं को भेजे जा रहे हैं निमन्त्रण

गृहमन्त्री श्री अमित शाह जी से भेंट एवं पधारने हेतु सादर आमन्त्रण

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जयन्ती एवं आर्यसमाज के 150वें स्थापना वर्ष के दो वर्षीय आयोजनों के समापन समारोह के रूप में भव्य एवं विशाल आर्य समाज सार्द्ध शताब्दी अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन, दिल्ली-2025 के निमंत्रण देने की श्रृंखला देश-विदेश में लगातार गतिशील है। इस क्रम में भारत राष्ट्र के माननीय गृहमन्त्री श्री अमित शाह जी को निमंत्रण देने के लिए आर्य समाज के प्रतिनिधि मंडल ने शिष्टाचार भेंटकर उन्हें महासम्मेलन में पधारने हेतु सादर आमंत्रण दिया।

इस अवसर पर ज्ञान ज्योति महोत्सव आयोजन समिति के अध्यक्ष एवं जे.बी.एम. ग्रुप के चेयरमैन श्री सुरेंद्र कुमार आर्य जी, डॉ राजेंद्र विद्यालंकार जी, अखिल भारतीय दयानंद सेवाश्रम संघ के महामंत्री श्री जोगेंद्र खट्टर जी, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामंत्री श्री विनय आर्य जी एवं उपप्रधान श्री अरुण प्रकाश वर्मा जी उपस्थिति रहे।

सम्पादकीय

आर्यसमाज सार्द्ध शताब्दी अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन, दिल्ली, एक स्वर्णिम अवसर

आओ आर्यो, चलो आर्यो, दिल्ली दिल से पुकार रही, अंतर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन, बार-बार उच्चार रही

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन 2025 की तैयारियां पूरी शक्ति के साथ गतिशील हैं, दिल्ली एनसीआर और दिल्ली से बाहर विभिन्न प्रान्तों में प्रतिदिन बैठकें सम्पन्न हो रही हैं, नई -नई योजनाएं निर्मित हो रही हैं, व्यक्ति, परिवार, समाज, संगठनों, शिक्षण संस्थानों, आर्य प्रतिष्ठानों द्वारा निमंत्रण दिए जा रहे हैं, आर्य समाज के हर स्तर पर अधिकारी, कार्यकर्ता, सदस्य, वैदिक विद्वान, संन्यासी, वानप्रस्थी, धर्माचार्य, पुरोहित, ब्रह्मचारी, ब्रह्मचारिणी, हर आयु वर्ग के स्त्री-पुरुष स्वयं निमंत्रण पत्र बन गए हैं, जहां भी जाते हैं वहीं अंतर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन 2025 का निमंत्रण देते हैं और जोर देकर कहते हैं कि यह आपका अपना महासम्मेलन है, इसकी तिथियां 30 अक्टूबर से 2 नवम्बर 2025 हैं, ये पूर्व की भांति स्वर्ण जयंती पार्क, सेक्टर 10 रोहिणी में भव्य और विशाल रूप में आयोजित हो रहा है, इसकी सफलता आर्य समाज की सफ़लता है, इसमें सबको अपने परिवार, इष्ट मित्रों सहित पहुंचना है, अपने सगे संबंधियों को भी साथ लेकर जाना है, हम सबको इसमें तन, मन और धन से सहयोगी बनना है, इस कार्यक्रम में हम सबको अत्यंत उपयोगी बनना है, उद्योगी बनना है। इसके अतिरिक्त आर्यो की भावना और कामना का कमाल तो तब देखने में आता है जब वे अंतर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन 2025 के स्नेहिल निमंत्रण की ध्वनि को विदेशों में भी गुंजा रहे हैं। प्रिंट मिडिया और सोशल मीडिया के माध्यम से जन-जन को आमंत्रित कर रहे हैं।

- शेष पृष्ठ 2 पर

महासम्मेलन में भाग लेने के लिए 30 अक्तूबर की प्रातः पहुंचें सभी आर्यजन

30 अक्टूबर से 2 नवम्बर 2025

सम्मेलन स्थल : स्वर्ण जयंती पार्क, रोहिणी, सैक्टर-10, दिल्ली-85

सुन्दर व्यवस्था हेतु सम्मेलन में आने से पूर्व समस्त आर्यजन अपना पंजीकरण अवश्य करा लेवें। आगन्तुक महानुभावों के आवास एवं भोजन की व्यवस्था आयोजकों की ओर से की जाएगी।

पंजीकरण हेतु लॉगइन करें - **www.aryamahasammelan.com**

देववाणी-संस्कृत

आराधना कर

वेद-स्वाध्याय

अभि प्र गोपतिं गिरेन्द्रमर्च यथा विदे। सूनुं सत्यस्य सत्पतिम्।।
-ऋ० 8।69। 4; साम० पूं० 2।28।4: अथर्व 20।92।1
ऋषि:-प्रियमेध:।। देवता-इन्द्र:।। छन्द:-गायत्री।।

शब्दार्थ- हे मनुष्य! **यथाविदे** = यथार्थ ज्ञान पाने के लिए तू **गोपतिम्** = इन्द्रियों के स्वामी **इन्द्रम्**= अत्मा का **गिरा**= वाणी द्वारा **अभि प्र अर्च** = अपरोक्ष और पूरी तरह पूजन कर, उस आत्मा का जो **सत्यस्य सूनुम्** = सत्य का पुत्र है और **सत्पतिम्** = सदा सत् का पालक है।

विनय- हे मनुष्य! यदि तू यथार्थ सत्यज्ञान प्राप्त करना चाहता है तो तू इन्द्र की शरण में जा। ये इन्द्रियाँ-प्रत्यक्ष ज्ञान का साधन समझी जानेवाली ये इन्द्रियाँ तुझे परिमित ज्ञान ही देंगी तथा बहुत बड़ा भ्रामक ज्ञान उत्पन्न करेंगी; मन इन्द्रिय भी तुझे दूर तक नहीं पहुँचाएगी; और तेरे राग-द्वेषपूर्ण मलिन मन की तर्कना-शक्ति केवल कुतर्क में लगेगी। बाहर से मिलनेवाला ज्ञान अर्थात् विद्वानों के उपदेश और तत्त्वज्ञानियों के ग्रन्थ अपनी-अपनी दृष्टि से कहे व लिखे जाने के कारण तुझे कभी कुछ शान्ति न दे सकेंगे; बहुत सम्भव है कि ये तुझे और उलझन में डाल दें। तुझे शान्ति दे सकनेवाला यथार्थ ज्ञान अपने अन्दर से, अपनी आत्मा से ही मिलेगा। इसे तू अपनी आत्मा में खोज; उस अपनी आत्मा में खोज जो इन सब इन्द्रियों का स्वामी है, जिसने अपनी शक्ति प्रदान करके मन आदि इन्द्रियों को अपना साधन बना रखा है, जो सत्य ज्ञानस्वरूप है, जो परम् सत्यस्वरूप परमात्मा का पुत्र और जो स्वभावत: सदा सत्य का पालक है। हे मनुष्य! तू इस सत्यदेव की पूजाकर, आराधना कर, पूरे यत्न से इसे प्रसन्न कर जो तुझ सत्य मिल जाएगा। वाणी-शक्ति द्वारा तू इसकी अपरोक्ष पूजा कर। इस सत्यमय देव की आरधना करने के लिए तुझे सत्यमय वाणी की साधना करनी पड़ेगी। बोलने में, व्यवहार में, हर एक अभिव्यक्ति में पूरी तरह सत्य का पालन करना होगा; अन्दर की मनोमय वाणी में भी सर्वथा सत्य के ही चिन्तन मनन की विकट तपस्या करनी होगी। अन्दर घुसने पर ही तुझे पता लगेगा कि परिपूर्ण वाणी द्वारा सत्य की आराधना करना कितना कठिन हे, पर साथ ही यह भी सच है कि जब तू यह साधना पूरी कर लेगा तो तेरा 'सत्य सूनु', 'सत्पति' आत्मा प्रकट हो जाएगा और अपना अमूल्य भण्डार, सब सत्यज्ञान के रत्नों का भण्डार, तेरे लिए खोल देगा। तब तुझे उलझन न रहेगी, तेरा निर्मल मन ठीक ही तर्क करेगा, तेरी इन्द्रियाँ भी अधिक स्पष्ट देखेंगी, और सबसे बड़ी बात तो यह है कि तब तुझे वह सत्मयी, 'ऋतम्भरा' बुद्धि मिल जाएगी जिसके द्वारा तू जब जिस विषय का यथार्थ ज्ञान पाना चाहेगा वह सब तुझे प्रकाशित हो जाया करेगा। सत्य का पालन करनेवाला सत्पति आत्मा स्वयमेव तेरे लिए सत्य की रक्षा करता रहेगा। वाणी द्वारा सत्य की साधना करने का यह स्वाभाविक फल है। हे मनुष्य! तू इस सत्य इन्द्र की आराधना कर, उपरोक्त रूप से पूरी तरह आराधना कर।

-: साभार:- वैदिक विनय

वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

प्रथम पृष्ठ का शेष

आर्यसमाज सार्द्ध शताब्दी अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन, दिल्ली, एक स्वर्णिम अवसर

....पिछले दो वर्षों में आर्य समाज द्वारा भारत के कोने-कोने में और विदेशों में जितने भी आयोजन हुए हैं, उनसे गांव गांव, शहर शहर, नगर नगर, गली गली महर्षि दयानंद सरस्वती जी की शिक्षाओं और आर्य समाज के सिद्धांतों को जन जन तक, घर घर तक पहुंचाने का पूरा प्रयास सफलता पूर्वक किया गया है। प्रिंट मिडिया और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के माध्यम से भी खूब प्रचार-प्रसार किया गया है और किया जा रहा है। भारत की सभी प्रांतीय सभाओं, विदेशों की आर्य प्रतिनिधि सभाओं, आर्य समाजों, वानप्रस्थ आश्रमों, वृद्धाश्रमो, गुरुकुलों, कन्या गुरुकुलों, अनाथालयों, डी.एवी शिक्षण संस्थानों, आर्य विद्यालयों, आर्य प्रतिष्ठानों और विश्व व्यापी समस्त आर्य परिवारों ने सभी आयोजनों में पूरी निष्ठा से अपनी सहभागिता और योगदान देकर ऋषि भक्ति, राष्ट्र भक्ति, ईश्वर भक्ति का संदेश संसार को दिया है, महर्षि दयानंद सरस्वती जी और अपने आर्य संन्यासियों, विद्वानों, बलिदानियों, महापुरुषों को नमन करके स्वयं को गौरवान्वित किया है, इन दो वर्षीय आयोजनों के समापन समारोह के रूप में आर्य समाज सार्द्ध शताब्दी अंतर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन दिल्ली-025 एक स्वर्णिम अवसर है - अत:आइए हम सब मिलकर इसे सफल बनाएं।.....

इस क्रम में जो आर्य समाज के परिवार, बच्चे, बच्चियां विदेशों में रहते हैं उन सबको इन दिनों में भारत बुला रहे हैं महासम्मेलन में सहभागिता के लिए। अत: अगर आपने अभी तक अपने बच्चों को निमंत्रण नहीं दिया है तो अवश्य दें और इस विशेष अवसर पर उन्हें जरूर बुलाएं, महर्षि दयानंद सरस्वती जी के वृहद परिवार आर्य समाज से उनका परिचय कराएं। इसके पीछे आर्यो की भावना यही है-

ऋषि, राष्ट्र, ईश्वर भक्ति का नया सवेरा लाना है
पाखंडों के षड्यंत्रों को जड़ से हमें मिटाना है

क्योंकि यह अवसर ही कुछ ऐसा है, जब गांव शहर, नगर, महानगर, प्रांत, देश की सीमा से आगे संपूर्ण विश्व की आर्य जनता जिस अवसर की बेसब्री से प्रतीक्षा कर रही थी, वह अब हमारे सामने है, और वह है 30 अक्टूबर से 2 नवंबर 2025 तक दिल्ली में होने वाला अंतर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन। आर्य समाज द्वारा महर्षि दयानंद सरस्वती जी की 200वीं जयंती और आर्य समाज के 150वें स्थापना वर्ष के 2 वर्षीय आयोजनों का शुभारंभ 12 फ़रवरी 2023 को नई दिल्ली के इंदिरा गांधी इनडोर स्टेडियम में हुआ था, जिसमें भारत के माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने महर्षि दयानंद सरस्वती जी को नमन करते हुए आर्य समाज के गौरवशाली इतिहास को स्वयं स्मरण किया हम सबको अपनी चिर-परिचत शैली में याद कराया था और आर्य समाज के सेवाकार्यों की उन्मुक्त हृदय से सराहना की थी, उस समय आपने आर्यजनों को संबोधित करते हुए कहा था कि ये आयोजन दो वर्ष तक अनवरत चलेंगे। वर्ष 2024 में महर्षि दयानंद सरस्वती जी की 200वीं जयंती, जिसे आर्य समाज ने ऋषि की जन्मभूमि टंकारा में ऐतिहासिक रूप से मनाया, जिसमें स्वयं भारत राष्ट्र की माननीय राष्ट्रपति श्रीमती द्रोपदी मुर्मू ने पहुंचकर कृतज्ञता ज्ञापित की। वर्ष 2025 में आर्य समाज का स्थापना दिवस मुंबई में मनाया गया। भारत के विभिन्न प्रान्तों और देश विदेश में हर्षोल्लास से सफ़लता पूर्वक निरंतर उसके आयोजन हो रहे हैं, प्रधानमंत्री जी ने तो 2026 में स्वामी श्रद्धानंद जी के 100 वें बलिदान दिवस को लेकर भी कहा था कि आर्य समाज के ये आयोजन तीन वर्ष तक चलने वाले हैं। किन्तु यहां दो वर्षीय आयोजनों के समापन समारोह के रूप में अंतर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन 2025 को ही सामने रखकर विचार किया जाए तो यह अवसर अपने आप में अत्यंत विशेष स्वर्णिम बनकर आया है।

पिछले दो वर्षों में आर्य समाज द्वारा भारत के कोने-कोने में और विदेशों में जितने भी आयोजन हुए हैं, उनसे गांव गांव, शहर शहर, नगर नगर, गली गली महर्षि दयानंद सरस्वती जी की शिक्षाओं और आर्य समाज के सिद्धांतों को जन जन तक, घर घर तक पहुंचाने का पूरा प्रयास सफलता पूर्वक किया गया है। प्रिंट मिडिया और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के माध्यम से भी खूब प्रचार-प्रसार किया गया है और किया जा रहा है। भारत की सभी प्रांतीय सभाओं, विदेशों की आर्य प्रतिनिधि सभाओं, आर्य समाजों, वानप्रस्थ आश्रमों, वृद्धाश्रमो, गुरुकुलों, कन्या गुरुकुलों, अनाथालयों, डी.एवी शिक्षण संस्थानों, आर्य विद्यालयों, आर्य प्रतिष्ठानों और विश्व व्यापी समस्त आर्य परिवारों ने सभी आयोजनों में पूरी निष्ठा से अपनी सहभागिता और योगदान देकर ऋषि भक्ति, राष्ट्र भक्ति, ईश्वर भक्ति का संदेश संसार को दिया है, महर्षि दयानंद सरस्वती जी और अपने आर्य संन्यासियों, विद्वानों, बलिदानियों, महापुरुषों को नमन करके स्वयं को गौरवान्वित किया है। समय-समय पर आर्य समाज द्वारा सम्मेलन, महासम्मेलन और अंतर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन सफलता पूर्वक मनाए जाते रहे हैं , किन्तु महर्षि दयानंद सरस्वती जी के 200 वें जयंती वर्ष और आर्य समाज के 150 वें स्थापना वर्ष के आयोजनों की लंबी शृंखला के समापन समारोह के रूप में यह विशेष तथा स्वर्णिम अवसर सिद्ध हो रहा है, इससे पूर्व पूरे भारत में और विश्व के कई देशों में भव्य आयोजन हुए हैं, उन सब कार्यक्रमों से अनेक लोग आर्य समाज के संगठन से जुड़े हैं, उन सबको इस भव्य और विशाल अंतर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन में सम्मिलित होकर अपने विराट आर्य समाज परिवार से मिलने का अवसर प्राप्त होगा, 200 और 150 वर्षों का लंबा अंतराल, इस कालखंड में महर्षि दयानंद सरस्वती जी से लेकर स्वामी श्रद्धानंद, लाला लाजपत राय, पंडित गुरुदत्त विद्यार्थी, महात्मा हंसराज, पंडित लेखराम, लाखों स्वतंत्रता सेनानी, हजारों सत्याग्रही, आर्य समाज के आधार स्तम्भ समाज सुधारक, अज्ञान, अविद्या अंधविश्वास, ढोंग, पाखण्ड, और कुरीतियों से समाज को बचाने के लिए अपनी, अपने परिवार की परवाह न करते हुए जान की बाजी लगाने वाले रणबांकुरों के आदर्श जीवन से प्रेरणा लेने का अवसर प्राप्त होगा, हम क्या थे, क्या हो गए और भविष्य में क्या कर सकते हैं, इन महत्वपूर्ण विषयों पर एक नया चिंतन, मंथन मिलेगा। वैदिक धर्म, संस्कृति और संस्कारों को, महर्षि दयानंद और आर्य समाज की शिक्षाओं को जन-जन तक पहुंचाने की नई सोच, नई खोज, नई योजनाएं, नई रणनीतियां और नया उत्साह प्राप्त होगा, बस जरूरत यह है कि हम भी अंतर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन में नए जोश में उपस्थित होकर आर्य समाज के नए युग का स्वागत करें। तो आइए, 30 अक्टूबर से 2 नवम्बर 2025 तक दिल्ली के स्वर्ण जयंती पार्क, सेक्टर 10 रोहिणी में पूरे दल, बल के साथ दिल्ली पहुंचने का संकल्प करें। - **सम्पादक**

साप्ताहिक
आर्य सन्देश
25 अगस्त, 2025 से 31 अगस्त, 2025

मानव समाज की उन्नति में आर्य समाज का अमूल्य योगदान

- स्वामी डॉ. देवव्रत सरस्वती
अध्यक्ष, सार्वदेशिक आर्य वीर दल

गतांक से आगे -

महर्षि दयानन्द जी ने सत्यार्थ प्रकाश का छठा सम्मुल्लास राजीति दृष्टिकोण से ही लिखा है जिसको आर्य समाज ने भुला ही दिया अन्यथा महात्मा गान्धी के आन्दोलनों में सम्मिलित .... बहु संख्यक आर्य सज्जन उनमें सम्मिलित न होकर राजार्य सभा का निर्माण कर आगे बढ़ते तो आर्य समाज का इतिहास कुछ और ही होता। यह नेताओं की अदूरदर्शिता ही मानी जायेगी। वर्तमान में इतना तो हो सकता है कि आर्य समाज अपनी कुछ मूलभूत मान्यताओं का चयन कर उन्हें ही मतदान करे जो पार्टी इनसे सहमत हो।

आज विदेशी शक्तियाँ हिन्दुओं को दिशा भ्रमित कर उन्हें परस्पर लड़ने और बांटने का कुचक्र कई राजनैतिक दलों के माध्यम से चला रही हैं। उनका यह षड़यन्त्र राष्ट्र की एकता एवं समरसता को छिन्न-भिन्न सकता है इसका स्थायी समाधान भी महर्षि दयानन्द जी द्वारा निर्दिष्ट शिक्षा नीति में सत्यार्थ प्रकाश के दूसरे समुल्लास में दिया है। स्वामी जी कहते हैं- यह जातिनियम और राजनियम होना चाहिये कि सभी के बच्चों को विद्यालयों में अनिवार्य रूप में प्रविष्ट कराया जाये। चाहे राजा का लड़का हो चाहे रंक का सभी को तुल्य खान-पान, शिक्षा दी जाये। सभी को तपस्वी होना चाहिये। जब सभी को निशुल्क शिक्षा और उन्नति करने का समान अवसर मिलेगा तो अगड़े-पिछड़े, ऊँच-नीच, जाति-पाति का भेदभाव अपने आप समाप्त हो जायेगा। आर्य समाज को इस दिशा में सक्रिय होना हेगा।

वर्तमान समय में धर्म के नाम पर भी लोगों को दिग् भ्रमति किया जा रहा है। यदि हम इण्टरनेट पर देखें तो धर्म के नाम पर सर्वत्र गुरुडम का ही बोलबाला है। स्मरण रहे धर्म उन शाश्वत मूल्यों का नाम है जो मानव मात्र के लिये स्वीकार करने योग्य हैं। परन्तु धर्म के नाम पर विभिन्न देवी-देवताओं की पूजा, अमुक नदी या तीर्थ में स्नान करने से पापों से मुक्ति, ईश्वर के स्थान पर साम्प्रदायिक धर्म गुरुओं की माला, लाकेट, और उनका विलासिता पूर्ण जीवन देख आज का युवक मन से आडम्बर को स्वीकार नहीं कर रहा है। वह धर्म एवं ईश्वर का वास्तविक स्वरूप जानना चाहता है। आर्य समाज का यह दायित्व है कि वह सच्चा वैदिक धर्म और ईश्वर के आत्मिक उन्नति के लिय ध्यान, साधना तथा उपासना की सत्यार्थ प्रकाश और ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका में ही दी गई पद्धति के अनुसार शिविरों का आयोजन और प्रशिक्षण की व्यवस्था करें। दर्शन योग महाविद्यालय रोजड़ तथा अन्य लोग प्रयत्न कर भी रहे है। इसे और आगे बढ़ाने की आवश्यकता हैं।

प्राय: देखा जाता है कि किसी धार्मिक अनुष्ठान, कथा, प्रवचन आदि में माताओं का बहुत योगदान रहता है। उनका हृदय सुकोमल और समुचित शिक्षा न होने के कारण धर्म के नाम पर कोई भी उन्हें दिग भ्रमित कर देता है। स्त्रियों को सुशिक्षित और सम्मानित करने का प्रयास महर्षि स्वामी दयानन्द जी ने किया है वह अन्यत्र दुर्लभ है। इस कार्य के लिये महिला प्रचारकों की नियुक्ति करनी होगी।

सबसे महत्त्वपूर्ण विषय राष्ट्र है कि आर्य समाज में नये कार्यकर्त्ताओं के निर्माण की योजना बनाई जाये। जो मिश्नरी प्रचारक हों। वे चाहे किसी भी व्यवसाय में लगे हों परन्तु उनकी कथनी और करनी मैं आर्य समाज की झलक दिखलाई देनी चाहिये। ''**दीप से दीपजले**'' उनके जीवन एवं आदर्श को देख दूसरे लोग भी आर्य समाज के प्रति आकर्षित होंगे। इसके अतिरिक्त वर्णाश्रम व्यवस्था के अनुसार आर्यसमाज के विद्वान एवं प्रतिष्ठित लोग वानप्रस्थ एवं संन्यास लेकर जब धर्म प्रचार के लिये निकलेंगे तो जनता उनका सहर्ष ही स्वागत करेगी।

आर्यजन ! आइये महर्षि स्वामी दयानन्द जी की 150वीं जयन्ती के सुअवसर पर हम ''संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना'' महर्षि के इस नियम को शिरोधार्य कर प्रथम शारीरिक, आत्मिक उन्नति का संकल्प करें और पश्चात् सामाजिक उन्नति की योजनायें बनायें। पहले किसी गांव या नगर के मौहल्ले में एक भी आर्य समाजी होता था तो उसकी एक अलग पहचान होती थी। गले में जनेऊ, सन्ध्या, यज्ञ स्वाध्याय उनके जीवन का अनिवार्य अंग होते थे। हमें पहले स्वयं आर्य और फिर सबको बनाने का संकल्प लेना होगा। ❖

परिवर्तन : आता नहीं है - लाया जाता है। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी : एक संक्षिप्त जीवन परिचय

महर्षि दयानन्द के दु:ख, क्रोध, चिन्ता और शिकायत के कारण

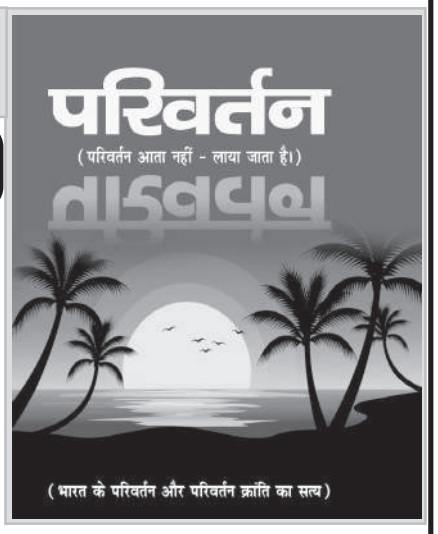

गतांक से आगे -

दयानन्द को दु:ख मिश्रित क्रोध है तो योगीराज श्रीकृष्ण पर लगाए लांछनों पर है और उनके लांछन लगाने वालों को वे कोई छूट देने को तैयार नहीं। वह जो शब्द लिखते हैं चाहे कैसे भी हैं, पर उनके लिए कृष्ण की मर्यादा बचानी आवश्यक है। क्यों है दु:ख-कृष्ण के ऊपर लगे आरोपों से दयानन्द को। क्या परेशानी है अगर कोई कृष्ण को रसिया बताता है। वे अपने जहर देने वालों को तो पैसे देकर भगाने को तैयार हैं पर कृष्ण पर आरोप लगाने वालों पर दया करने को तैयार नहीं। वे खुद के अपमान पर तो दु:खी नहीं पर कृष्ण के अपमान को सहने को तैयार नहीं। कभी गहराई से विचार किया हमनें!

गंगा में बेटे की लाश से कफन वापस खीचती हुई मां को देखकर, दयानन्द देश की दरिद्रता से प्रवित हो उठे। वृन्दावन के आश्रमों में बाल विधवाओं की स्थिति देख कर, दयानन्द दु:खी हैं। पुण्य के नाम पर अपनी बेटियां तक पण्डों को दान किए जाने की परम्परा को देखकर, दयानन्द दु:खी हैं।

आर्यावर्त का प्राचीन वैभव जानते हुए, आज की इस दुरावस्था पर दयानन्द दु:खी हैं। विशाल वैभव वाले आर्यावर्त का विखण्डन देखकर, विधर्मी शासक को अपने ऊपर बैठा देखकर दयानन्द विचलित हैं। पण्डितों के स्थानों पर पकता मांस देखकर दयानन्द दु:खी हैं। दीन और अबलाओं का, धर्म के नाम पर, शोषण होता देखकर दयानन्द व्यथित हैं। दलित वर्ग की दुरावस्था को देखकर दयानन्द अश्रुपूरित हैं और माता-गौमाता को कटते हुए देखकर दयानन्द अपने सिद्धान्तों के दायरे से बहुत आगे निकलकर सीधे ईश्वर से शिकायत करने पहुंच जाते हैं और उस परब्रह्म ईश्वर की न्याय व्यवस्था पर ही प्रश्नचिन्ह खड़ा करते हैं, जैसे उनके दु:ख की पराकाष्ठा हो गई हो!

ये सब देखते तो और भी थे, जानते तो और भी थे, समझते तो और भी होंगे, तो भला दयानन्द ही क्यों दु:खी हों? तप ऐसा था मोक्ष मिल सकता था, पर आए तो दु:ख मिटाने को- मोक्ष पाने को तो नहीं।

सोचो कुछ क्षण रुककर, उस महामना के बारे में, उस योगी, उस आदित्य ब्रह्मचारी के बारे में, आखिर क्यों वो दु:खी हो रहा है? क्या खुद के दु:ख के लिए? वह तो उन्होंने स्वयं अंगीकार किया है, किसी के कहने से नहीं। नहीं मिलेगा दयानन्द, कम से कम ऐसा दयानन्द।

रोग बड़ा था, केवल दु:खी होकर क्या मिलेगा, जानते थे, इसलिए एक-एक अवस्था के समाधान को तलाशा, उसके लिए कार्य आरम्भ किए। अब क्या करना है, कैसे करना है, लिखा भी, कहा भी, समझाया भी, बाकी ईश्वर की व्यवस्था मानकर सन्तोष भी किया।

मात्र 20 वर्ष के सामाजिक जीवन में समाज के छोटे से छोटे व्यक्ति से मिले। समाज के उच्च वर्ग- राजाओं, सामन्तों से मिलकर उनके जीवन की उन्नति का मार्ग बताया, शर्माए नहीं, डरे नहीं, दबे नहीं। पण्डितों से हिन्दू धर्म की, मौलवियों से मुस्लिम मत और पादरियों से ईसाइयत की बात की, जो कहा स्पष्ट कहा, हित सोचकर कहा।

हर ग्रन्थ की सच्चाई को खोलकर रख दिया, जिसने अभी तक नहीं खोले थे ग्रन्थ, उसने भी खोले, ग्रन्थों को बदलना पड़ा। मजबूरी में बदले, चाहे वो किसी मत से सम्बन्धित हों, सबको अपने-अपने ग्रन्थ फिर से पढ़ने को मजबूर किया।

जीवन में किसी को न छोटा माना, न किसी को बड़ा, सबके हाथ का भोजन किया, किसी ने बात न मानी तो दु:खी नहीं, किसी ने मिलना नहीं चाहा तो शोक नहीं, जीवन की डोर को अक्षुण्ण न मानकर, इच्छा न होते हुए भी, पर आगे काम चलना चाहिए, मैं रहूं-न-रहूं, आवश्यक व्यवस्था समझकर अप्रैल-1875 में मुम्बई में 'आर्यसमाज' की स्थापना की। स्थान-स्थान पर उसकी शाखाएं खोलने पहुंचे। खुद न कोई पद लिया न 'परम' शब्द का खुद के लिए उपयोग होने दिया। प्रथम आर्यसमाज मुम्बई के भी साधारण सदस्य ही बने रहे।

6 फिट 8 इंच लम्बे, गौर वर्ण, आदित्य ब्रह्मचारी अब केवल वेद भाष्य का कार्य पूर्ण करना चाहते थे, पर निरन्तर यात्राएं, प्रवचन, शास्त्रार्थ, चर्चाओं के कारण उसकी गति ज्यादा नहीं बढ़ पा रही थी। षड्यन्त्र पर षड्यन्त्र चल रहे थे, अंग्रेजी सरकार

भी, हमारे भाई भी, कुरानी भी, ईसाई भी। एक ईश्वर और दूसरा सत्य, बस इन दो का ही साथ था। ईश्वर की आज्ञा के विरुद्ध कुछ न करने और सत्य से समझौता न करने का भीष्म संकल्प उन्हें जोधपुर ले गया और राजा को चरित्र सम्बन्धी सीख के चलते, षड्यन्त्र हुआ-जहर दे दिया गया। योगी थे, जहर स्वयं निकाल सकते थे, निकाला भी, पर ये तो भयानक षड्यन्त्र था, पहले जहर, फिर डॉक्टर की करतूत, राजा का अपने अतिथि स्वामी से मिलने भी न आना, न किसी को सूचित करना, स्वत: सारे अर्थ बयां कर रहा था।

- क्रमश:

पुस्तक घर बैठे/ऑनलाइन प्राप्त करने हेतु कोड स्कैन/लॉगइन करें
www.vedicprakashan.com
अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
वैदिक प्रकाशन
15, हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001
मो. 09540040339, 011-23360150

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जयन्ती एवं 150वें आर्यसमाज स्थापना वर्ष के आयोजनों के समापन समारोह

सार्द्ध शताब्दी अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन, दिल्ली-2025

निमन्त्रण हेतु देशभर की प्रान्तीय सभाओं एवं विभिन्न आर्य संगठनों के साथ बैठकें

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200 वीं जयन्ती वर्ष और आर्य समाज के 150वें स्थापना वर्ष के 2 वर्षीय आयोजनों के भव्य, विशाल एवं विराट समापन समारोह के रूप में आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन 2025 की तैयारी, निमंत्रण तथा प्रचार प्रसार का कार्य युद्ध स्तर पर गतिशील है।

प्रांतीय सभाओं के अधिकारी, आर्य समाजों, शिक्षण संस्थानों, आर्यवीर/वीरांगना दल के अधिकारी, कार्यकर्ता और सदस्यों द्वारा विभिन्न क्षेत्रों में लगातार बैठकों का दौर गतिशील है, जिनमें हर आयु वर्ग के स्त्री, पुरुष और युवा अपनी सहभागिता, सेवा और योगदान को सुनिश्चित कर रहे हैं। इन समस्त बैठकों में उपस्थित आर्य नर नारियों की यही भावना और कामना दिखाई देती है कि हमें महर्षि दयानन्द की शिक्षाओं को जन-जन तक पहुंचाना है और विश्वधरा पर ओ३म् ध्वज फहराना है।

हरियाणा प्रदेश के अन्तर्गत आर्य केन्द्रीय सभा गुरुग्राम की बैठक में

गुरुग्राम के विभिन्न आर्य संगठनों के कार्यकर्ताओं अधिकारियों को महासम्मेलन का निमन्त्रण

आर्यसमाज उद्गीर में महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा के अन्तर्गत राज्यस्तरीय आर्य कार्यकर्ता व्यापक बैठक एवं प्रांतीय आर्यवीर दल के मार्गदर्शन कार्यशाला में निमन्त्रण

आर्य वीर दल हरियाणा की निमन्त्रण बैठक के उपरान्त ग्रुप फोटो : सार्वदेशिक आर्य वीर दल के प्रधान संचालक श्री सत्यवीर आर्य के साथ हरियाणा के संचालक श्री उमेद शर्मा

उत्तर प्रदेश के चन्दौली जिलान्तर्गत आर्यसमाज मन्दिर पण्डित दीनदयाल उपाध्याय नगर एवं आर्य समाज मन्दिर रेमा के साप्ताहिक यज्ञ-सत्संग के उपरान्त सम्मेलन का निमन्त्रण

आर्य वीर दल पंजाब के अन्तर्गत आर्य वीर दल अबोहर एवं आर्य वीर दल भटिण्डा के आर्यवीरों एवं अधिकारियों को दिल्ली महासम्मेलन का निमन्त्रण

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के अन्तर्गत आर्य समाज सागरपुर मे आर्य वीर दल की शाखा के आर्यवीरों को निमन्त्रण एवं विभिन्न व्यवस्थाओं में सहयोग देने का आह्वान

दिल्ली स्थित आर्य समाज सूरजमल विहार के अन्तर्गत यज्ञ प्रशिक्षण कार्यक्रम उपथित प्रशिक्षुओं एवं आर्यसमाज ग्रीन पार्क के अधिकारियों एवं कार्यकर्ताओं को निमन्त्रण।

दिल्ली की विभिन्न आर्य समाजों द्वारा श्रावणी पर्व, स्वाधीनता दिवस, रक्षा बन्धन एवं श्रीकृष्ण जन्मोत्सव समारोह पूर्वक हुए सम्पन्न

वैदिक धर्म, संस्कृति में पर्वों का विशेष महत्त्व सदा से ही रहा है। वर्तमान में महर्षि दयानंद सरस्वती जी के 200वें जयंती वर्ष और आर्य समाज के 150वें स्थापना वर्ष के मध्य में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के निर्देशानुसार विभिन्न आर्य समाजों द्वारा श्रावणी पर्व, स्वाधीनता दिवस एवं श्रीकृष्ण जन्मोत्सव के कार्यक्रम उमंग, उत्साह के वातावरण में यमारोह पूर्वक संपन्न हो रहे है अथवा आयोजित हुए हैं। श्रावणी पर्व के ये प्रेरक आयोजन लगातार चल रहे हैं, श्रावणी पर्व के सफल आयोजनों के लिए सभी आर्य समाजों को दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं।

आर्य समाज सुंदर विहार द्वारा श्रावणी पर्व के अवसर पर 9 अगस्त से 16 अगस्त 2025 तक गायत्री महामंत्र जप एवं हवन का आयोजन संपन्न हुआ, हर आयु वर्ग के साथ बच्चों की सहभागिता प्रशंसनीय रही।

आर्य समाज खजूरी खास द्वारा श्रीकृष्ण जन्माष्टमी, स्वाधीनता दिवस पर वेद प्रचार कार्यक्रम 14 से 17 अगस्त 2025 तक संपन्न हुआ, जिसमें यज्ञ, भजन और प्रवचनों का सुंदर आयोजन किया गया है ।

आर्य समाज नांगलोई द्वारा 9 अगस्त को श्रावणी पर्व एवं यज्ञोपवीत परिवर्तन समारोह धूमधाम से संपन्न हुआ। भजन एवं प्रवचनों के कार्यक्रमों में क्षेत्रीय आर्यजन, अधिकारी सम्मिलित हुए।

आर्य समाज नारायण विहार द्वारा 18 से 23 अगस्त तक श्रावणी पर्व धूमधाम से मनाया गया। इस अवसर पर यज्ञ, भजन और प्रवचनों के प्रेरक कार्यक्रमों से आर्यजन लाभान्वित हुए।

आर्य समाज 15 हनुमान रोड द्वारा 13 से 16 अगस्त तक श्रावणी पर्व के आयोजन में युजुर्वेदीय यज्ञ, भजन, प्रवनचन और आर्य सामज की दृष्टि में योगी राज भगवान श्री कृष्ण विषय पर गुरुकुलों-स्कूलों के छात्र-छात्राओं की भाषण प्रतियोगिता संपन्न हुई। जिसमें प्रथम-द्वितीय-तृतीय स्थान पर आने वाले महत्वपूर्ण संदेश प्रदान किये गए। इस अवसर पर भजन और प्रवचनों से समाज के अधिकारी -कार्यकर्त्ता और सदस्य लाभान्वित हुए।

रक्षामंत्री राजनाथ सिंह को बांधी राखी

वैदिक धर्म और संस्कृति सदा से पर्व प्रिय रही है। आर्य समाज द्वारा राष्ट्रीय पर्वों के साथ सामाजिक पर्वों को हर्षोल्लास से मनाने की परंपरा पुरातन है। सर्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सेवा इकाई अखिल भारतीय दयानंद सेवा श्रम संघ द्वारा संचालित शांति देवी कन्या गुरुकुल सैनिक विहार की छात्राओं ने रक्षा मंत्री श्री राजनाथ सिह के हाथों में राखी बांधकर रक्षाबंधन का पर्व मनाया

आर्य समाज आर्य नगर पहाड़गंज द्वारा 14 अगस्त 2025 को स्वाधीनता दिवस मनाया गया, जिसमें यज्ञ, ध्वजारोहण भजन, एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों के सफल आयोजन सम्पन्न हुए।

आर्य समाज लक्ष्मी नगर द्वारा 10 अगस्त 2025 को श्रावणी पर्व एवं संस्कृत दिवस धूमधाम से मनाया गया। इस अवसर पर यज्ञ, भजन, एवं प्रवचनों के कार्यक्रमों के साथ ही वेद मंत्र व श्लोकों की प्रस्तुति अत्यंत सारगर्भित सिद्ध हुई। इस अवसर पर यज्ञ, भजन और प्रवचनों का कार्यक्रम समारोह पूर्वक संपन्न हुआ।

आर्य समाज नया बांस द्वारा श्रावणी पर वेद प्रचार का आयोजन 10 से 18 अगस्त तक समारोह पूर्वक संपन्न हुआ। उसमें वेद, उपनिषद कथा एवं श्री कृष्ण जन्मोत्सव के अवसर पर भजन एवं प्रवचनों के विशेष आयोजन हुए।

आर्य समाज आउटर रिंग रोड विकासपुरी द्वारा 23-24 अगस्त 2025 को श्रावणी पर्व संपन्न हुआ। जिसमें यज्ञ विद्यार्थियों सहित सभी प्रतियोगियों को यथा योग्य पुरस्कार प्रदान किए गए।

आर्य समाज कृष्णा नगर द्वारा 15 अगस्त प्रात: 7:30 बजे से 8:30 तक यज्ञ, ध्वजारोहण, राष्ट्रभक्ति के गीत और 9:30 बजे से 10:30 तक दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री धर्मपाल आर्य जी द्वारा 30 अक्टूबर से 2 नवंबर 2025 तक स्वर्ण जयंती पार्क, सेक्टर 10, रोहिणी में आयोजित होने वाले अंतर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन की विशेष जानकारी तथा इस अवसर पर संघ के महामंत्री श्री जोगेन्द्र खट्टर जी भी उपस्थित रहे। रक्षा मंत्री जी ने बेटियों को अपनी शुभकामनाएं और आशीर्वाद प्रदान किया तथा आर्य समाज के सेवा कार्यों की प्रशंसा की।

दिल्ली कैंट में सैनिकों को बांधी राखी

आर्यसमाज सूरजमल विहार की बहनों ने रक्षाबंधन के पावन पर्व पर दिल्ली कैंट में पहुंचकर देश के सैनिकों की कलाई पर रक्षा सूत्र बाँधे और मिठाई खिलाकर उनके लिए मंगलकामना की।

ओ३म्
महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जयंती
आर्यसमाज स्थापना के 150वें वर्ष

सार्ध शताब्दी अंतर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन, 2025

30 अक्टूबर से 2 नवंबर 2025
स्वर्ण जयंती पार्क, रोहिणी, सेक्टर 10, नई दिल्ली 110085

महासम्मेलन में प्रस्तुति देने का स्वर्णिम अवसर

यदि आप महासम्मेलन में अपनी प्रस्तुति देना चाहते हैं तो आज ही इस लिंक पर जाकर अपना आवेदन करें
QR Code स्कैन कर पंजीकरण करें
bit.ly/IAMS25PLAY
आवेदन की अंतिम तिथि 30 अगस्त 2025

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जयन्ती पर दस लाख रुपये की पुरस्कार प्रतियोगिता

कॉमिक्स पढ़ें और जीतें लाखों के ईनाम

1 ईनाम लाख रुपये व विशेष उपहार

2 ईनाम 51000/- व विशेष उपहार

3रा ईनाम : 31000/- एवं विशेष उपहार (3)
4था ईनाम : 5100/- एवं विशेष उपहार (25)
5वां : नकद 2100/- (100)
6ठा : नकद 1000/- (250)
7वां : नकद 500/- (250)

प्रविष्टि की अन्तिम तिथि 1/10/2025

1 एवं 2 ईनाम विजेता तथा प्रतियोगिता में सर्वाधिक सहभागी बनने वाले विद्यालय/संस्था को भी विशेष ईनाम

कॉमिक्स में दिए गए प्रश्नपत्र को भरकर '**दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-1**' के पते पर (प्रश्नोत्तरी को फोल्ड करके लिफाफे में) भेजें या विद्यालय/संस्था की ओर से सभी प्रश्न उत्तर के साथ कॉमिक एकत्रित करके भी भेजें। **प्रविष्टियां भेजने की तिथि बढ़ाई गई है। अब अन्तिम तिथि 1 अक्टूबर** 2025 से पूर्व प्राप्त होने वाले उत्तर पत्र ही प्रतियोगिता में सम्मिलित होंगे।

साप्ताहिक स्वाध्याय

स्वमन्तव्य-व्यामन्तव्य प्रकाश

गतांक से आगे-

ये संक्षेप से स्वसिद्धान्त दिखला दिये हैं। इनकी विशेष व्याख्या इसी **'सत्यार्थप्रकाश'** के प्रकरण द्वितीय में है तथा **'ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका'** आदि ग्रन्थों में भी लिखी है, अर्थात् जो-जो बात सबके सामने माननीय है, उनको मानना अर्थात् जैसे सत्य बोलना सबके सामने अच्छा और मिथ्या बोलना बुरा है, ऐसे सिद्धान्तों को स्वीकार करता हूं; और जो मतमतान्तर के परस्पर विरुद्ध झगड़े हैं, उनको मैं पसन्द नहीं करता।

क्योंकि इन्हीं मतवालों ने अपने मतों का प्रचार कर मनुष्यों को फंसा के परस्पर शत्रु बना दिये हैं। इस बात को काट, सर्व सत्य का प्रचार कर, सबको ऐक्यमत में करा, द्वेष छुड़ा, परस्पर में दृढ़ प्रीतियुक्त कराके सबसे सबको सुखलाभ पहुंचाने के लिए मेरा प्रयत्न और अभिप्राय है। सर्वशक्तिमान् परमात्मा की कृपा, सहाय और आप्तजनों की सहानुभूति से 'यह सिद्धान्त सर्वत्र भूगोल में शीघ्र प्रवृत्त हो जावे' जिससे सब लोग सहज से धर्मार्थ-काम-मोक्ष की सिद्धि करके सदा उन्नत और आनन्दित होते रहें, यही मेरा मुख्य प्रयोजन है।

अलमतिविस्तरेण बुद्धिमद्वर्येषु

ओम् शन्नो मित्रः शं वरुणः शन्नो भवत्वर्य्यमा।। शन्न इन्द्रो बृहस्पतिः शन्नो विष्णुरुरुक्रमः।। नमो ब्रह्मणे। नमस्ते वायो। त्वमेव प्रत्यक्षं ब्रह्मासि। त्वमेव प्रत्यक्षं ब्रह्मावादिषम्। ऋतमवादिषम्। सत्यमवादिषम्। तन्मामावीत्। तद्वाक्तारमावीत्। आवीन्माम्। आवीद्वक्तारम् ओ३म् शान्तिः, शान्तिः शान्तिः।।

इति श्रीमत्परमहंस परिव्राजकाचार्य्योणां परमविदुषां श्री विरजानन्द सरस्वतीस्वामिनां शिष्येण श्रीमद्दयानन्द सरस्वती-स्वामिना विरचितः स्वमन्तव्या मन्तव्य-प्रकाशः सम्पूर्तिमगमत्।

स्वदेशी का संदेश

परदेशी स्वदेश में व्यवहार व राज्य करें तो बिना दारिद्रय और दुख के दूसरा कुछ भी नहीं हो सकता।

-सत्यार्थ प्रकाश दशम समुल्लास पृष्ठ-251॥

-क्रमशः

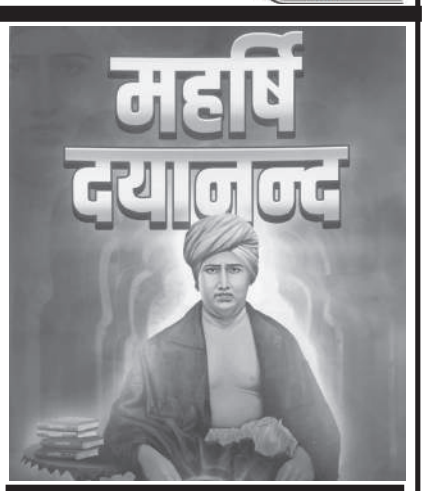

पं. इन्द्र विद्यावाचस्पति जी द्वारा लिखित एवं 200 वीं जयन्ती पर पुनः प्रकाशित जीवनी 'महर्षि दयानन्द' से साभार पुस्तक प्राप्ति के लिए ऑन लाइन www.vedicprakashan.com अथवा 9540040339 पर आर्डर करें।

Continue From Last Issue

Swamantavya-Vyamantavya Prakash

25. 'Purusharth is greater than destiny' because by purusharth the accumulated destiny is created, by whose improvement everyone improves and when it gets spoiled, everyone gets spoiled, because of this 'Purusharth' is bigger than 'Prarabdha'.

26. I consider 'man' him who has {destiny} the most deserving self-righteousness, and good behavior, in all position of love, Sukh, dukh.

27. 'Sanskar' is that which makes body, mind and soul perfect.That from birth to creation after death is of sixteen type. I consider it as my duty and nothing should be done for the dead after cremation.

28. 'Yagya' is activity in which scholars are felicitated, suitable craft i.e. chemical which is substance, its use and knowledge etc. auspicious qualities. I consider the performing of Agnihotradi, by which air, rain, water, medicine are to be purified and reach all the living beings, the best.

29. Just as 'Arya means people with best behaviour and 'Dasyu' means evil people, so I also believe.

30. 'Aryavarta' country is the name of this land because Arya people have been residing in it from the beginning of creation, but its span is Himalayas in the north, Vindhyachal in the south, Atak in the west and Brahmaputra river in the east. The country that is in between these four is called 'Aryavarta' and those who live in them all the time are also called 'Aryas'.

31.The teacher of Sangopang Veda-Vidyas who makes us adopt truth and abandon falsehood, is called 'Acharya'.

32. 'Shishya' is said to be the one who is able to receive true education and knowledge, religious soul, desire to learn and is beloved of Acharya.

33. 'Guru' Parents and other makes the children who adopt the truth and get rid of untruth, are also called 'Guru'.

34. The 'priest' who is a truthful preacher for the benefit of the host.

35. 'Upadhyay' who teaches completly or parts of the Vedas

36. 'Etiquette' to the students To accept the truth, abandoning the untruth, by taking knowledge from celibacy in a righteous manner and by judging the truth from the visible proofs, this is etiquette and the one who has all these question is called 'Elite'.

37. I also accept the all eight proofs, like pratakshaect.

38. 'Aapt' The one who is truthful, righteous, tries for the good of all, I call him 'Aapt'.

39. 'Examination' is of five types. Out of these, the first is God, his qualities-karma-nature and Vedavidya, secondly eight proofs, thirdly creation order, fourthly behavior of people and fifthly knowledge of the purity of our soul.

40. 'Charity (wishing and doing good for all human beings, get rid of bad deeds, the having best behavior and increasing good deeds, I call it charity.

To be Continue.....

With courtesy by the biography of "Maharshi Dayanand" re-published on the occasion of 200th birth anniversary and written by Pt. Indra Vidyavachaspati Ji. To buy online login WWW.vedicprakshan.com or contact - 9540040339

आर्य सन्देश के आजीवन सदस्यों की सेवा में सदस्यगण अपना शुल्क भेजें

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के मुखपत्र **साप्ताहिक "आर्यसन्देश"** के समस्त आजीवन सदस्यों की सूचनार्थ निवेदन है कि आर्यसन्देश का आजीवन शुल्क 10 वर्ष के लिए होता है, किन्तु सभा की ओर से अभी किसी भी सदस्य की सदस्यता को निरस्त नहीं किया गया है। आर्यसन्देश साप्ताहिक आपका अपना पत्र है, जिसके सफल एवं निरन्तर प्रकाशन में आपका सहयोग सादर अपेक्षित है। अतः ऐसे समस्त सदस्यों, जिन्होंने 2014 से पूर्व आजीवन सदस्यता ग्रहण की हो वे अपना आगामी 10 वर्षीय शुल्क 1500/- रुपये भेजकर तत्काल अपनी आजीवन सदस्यता का नवीनीकरण तक करवा लेवें, जिससे उन्हें नियमित रूप से आर्यसन्देश भेजा जाता रहे। पत्र व्यवहार के लिए कृपया अपना नाम, सदस्य संख्या, पिनकोड तथा मो. नं. अवश्य लिखें। आप अपना शुल्क सीधे निम्नांकित बैंक खाते में भी जमा करा सकते हैं- " Arya Sandesh Saptahik "

A/c No. 1098101002787 IFSC Code: CNRB0001098

Canara Bank, Parliament Street, New Delhi

कृपया शुल्क जमा कराने के उपरान्त डिपोजिट स्लिप/मैसेज का फोटो 9540040322 पर अवश्य भेजें- ***सम्पादक***

सार्द्ध शताब्दी अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन, दिल्ली: 30 अक्तूबर से 2 नवम्बर, 2025

रेल यात्रा के माध्यम से दिल्ली आने वाले आर्यजन कृपया ध्यान दें

दिल्ली पधारने के लिए आरम्भ हो गए हैं रेलवे टिकट आरक्षण

कन्फर्म टिकट पाने के लिए जल्दी करें और यदि वेटिंग हो तो भी टिकट बुक कराएं सभी को कन्फर्म कराने का प्रयास किया जाएगा

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जयन्ती एवं 150वें आर्यसमाज स्थापना वर्ष- ज्ञान ज्योति महोत्सव के समापन के रूप में आयोजित **आर्यसमाज सार्द्ध शताब्दी अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन दिल्ली-2025** की तिथियां **30 अक्तूबर से 2 नवम्बर 2025** (बृहस्पतिवार से रविवार) सुनिश्चित हैं। इस अवसर पर दिल्ली पधार रहे समस्त आर्यजनों की सुविधा हेतु सूचित किया जाता है कि **रेलवे आरक्षण 28 अगस्त से** आरम्भ हो गए हैं। कृपया इसका ध्यान रखते हुए रेलवे आरक्षण कराएं। जिन स्थानों से किन्हीं विशेष दिनों में ही ट्रेन चलती हैं और उनकी ट्रेन दिल्ली 30 अक्तूबर की प्रातः दिल्ली पहुंचती है तो उनके लिए विशेष रूप से सम्मेलन स्थल पर ही आवास एवं भोजन व्यवस्था 29 की रात्रि से उपलब्ध कराई जाएगी। महासम्मेलन स्थल पर पहुंचने के लिए दिल्ली के प्रमुख रेलवे स्टेशनों - नई दिल्ली, दिल्ली जंक्शन, हजरत निजामुद्दीन एवं आनन्द विहार रेलवे स्टेशनों से दिल्ली मैट्रो की सेवाएं ली जा सकती है। **मैट्रो की यैलो लाईन आने वाले रोहिणी सैक्टर-18-19 तथा रैड लाइन मैट्रो से आने वाले रिठाला मैट्रो स्टेशन** पर उतरकर सम्मेलन स्थल पर पहुंचें। आप कहां से, कब और कितने बजे पहुंच रहे हैं, इसकी सूचना अपने ग्रुप लीडर के माध्यम से ग्रुप लीडर के नाम, पते, फोन नं. और ग्रुप में आने वाले सदस्यों की सूची बनाकर सम्मेलन कार्यालय के पते **'15 हनुमान रोड नई दिल्ली-110001'** पर भेजें अथवा **aryasabha@yahoo.com** पर ईमेल करें।अपने ईमेल/पत्र पर 'आवास व्यवस्था हेतु' अवश्य लिखें। अधिक जानकारी लिए **9311721172** से सम्पर्क करें।

- ज्ञान ज्योति महोत्सव आयोजन समिति

आर्यसमाज सार्द्ध शताब्दी अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन
30-31 अक्तूबर एवं 1-2 नवम्बर, 2025
स्वर्ण जयन्ती पार्क, रोहिणी, सैक्टर-10, दिल्ली-110085

पुस्तक विक्रेता स्टाल बुक कराएं

महासम्मेलन स्थल पर वैदिक साहित्य के प्रचार-प्रसार के लिए साहित्य प्रचार स्टाल लगाए जाएंगे। इन स्टॉलों पर केवल वैदिक साहित्य, प्रचार सामग्री, यज्ञ सम्बन्धित सामग्री आदि ही विक्रय की जा सकेगी। इस पुस्तक बाजार में भोजन, चाय-पानी, नाश्ते आदि के स्टाल नहीं लगाए जा सकेंगे। स्टालों की संख्या सीमित रहेगी, जोकि पहले आओ-पहले पाओ के आधार पर दिए जाएंगे। चार से अधिक स्टाल बुक कराने वाले विक्रेताओं को अपने स्टाल पर अनिवार्य रूप से अग्निमशन यन्त्रों की व्यवस्था करनी होगी। स्टाल बुकिंग शुल्क 5000/- रुपये निश्चित किया गया है, जिसका भुगतान नगद/चैक/बैंक ड्रॉफ्ट अथवा RTGS/NEFT के माध्यम से निम्नांकित बैंक खाते या दिए गए स्कैन कोड द्वारा कर सकते हैं।

Delhi Arya Pratinidhi Sabha
A/c No. 910010008984897 IFSC:UTIB0002193
Axis Bank, Connaught Place, New Delhi

स्टाल बुकिंग करवाने अथवा अधिक जानकारी प्राप्त करने के लिए **संयोजक (स्टाल) श्री संजीव आर्य जी (9868244958)** से सम्पर्क करें। - ***संयोजक***

ओ३म्

आर्यसमाज स्थापना के 150वें वर्ष | महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जयंती

आर्यसमाज सार्द्ध शताब्दी
अंतर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन, 2025
30 अक्टूबर से 2 नवंबर 2025
स्वर्ण जयंती पार्क, सैक्टर 10, रोहिणी, नई दिल्ली 110085

पंजीकरण प्रारंभ
वेबसाइट पर आज ही अपना पंजीकरण करें
www.aryamahasammelan.com

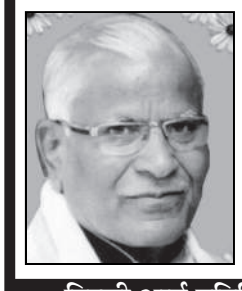

पंजीकरण हेतु उपयोगी निर्देश

जत्था (Group) बनाएँ
परिवहन के साधन, आगमन प्रस्थान के समय, आवास चयन, संस्था आदि के आधार पर प्रतिभागियों के अलग-अलग जत्थे बनाएं।

जत्था नायक (Group Leader)
बेहतर प्रबंध हेतु छोटे-छोटे जत्थे बनाएँ (जैसे 25 सदस्य) और प्रत्येक जत्थे का जत्था नायक चुनें।

जत्थे के सदस्यों का पंजीकरण
एक-एक करके जत्थे के सभी सदस्यों का पंजीकरण करें। सभी का अलग-अलग मोबाईल नंबर देंगे तो बेहतर रहेगा।

आवास
प्रत्येक जत्थे की आवश्यकता अनुसार निःशुल्क अथवा सशुल्क आवास चुनें। अपने आवास की व्यवस्था स्वयं भी कर सकते हैं।

आगमन / प्रस्थान
प्रत्येक जत्थे के परिवहन के साधन, आगमन / प्रस्थान के समय और स्थान की सूचना देवें। यह जानकारी टिकट बुक होने के बाद भी दे सकते हैं।

पंजीकरण संख्या
सफल पंजीकरण के बाद प्रत्येक सदस्य की पंजीकरण संख्या उसके मोबाईल नंबर पर भेज दी जाएगी।

कृपया 30 सितम्बर 2025 तक सभी जानकारी अवश्य डाल देवें ताकि हम आपको अच्छी से अच्छी सुविधाएं उपलब्ध कर सकें

पंजीकरण में किसी भी प्रकार की सहायता के लिए 93 1172 1172 पर संपर्क करें

शोक समाचार

श्री सुभाष अष्टीकर जी का निधन

आर्य प्रतिनिधि सभा कर्नाटक के पूर्व प्रधान एवं सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली के पूर्व अन्तरंग सदस्य श्री सुभाष मारुतराव अष्टीकर जी का 78 वर्ष की आयु में दिनांक 27 अगस्त, 2025 को अकस्मात निधन हो गया। वे काफी समय से अस्वस्थ चल रहे थे। उनका अन्तिम संस्कार 28 अगस्त को हल्लीखेड कर्नाटक में पूर्ण वैदिक रीति से किया गया।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्त्ता परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि दिवंगत आत्मा को सद्गति एवं शोक-संतप्त परिजनों को इस दारुण दुःख को सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करे। -सम्पादक

आर्यसमाज सार्द्ध शताब्दी अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन, दिल्ली
ऐतिहासिक रूप से भव्य, सुव्यवस्थित एवं सफल बनाने हेतु

दिल खोलकर दान दें

आर्यसमाज सार्द्ध शताब्दी अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन, दिल्ली-2025 को ऐतिहासिक रूप से भव्य, सुव्यवस्थित, सफल बनाने के लिए समस्त आर्यसमाजों, प्रान्तीय सभाओं, आर्य प्रतिष्ठानों, शिक्षण संस्थानों, आर्य परिवारों एवं औद्योगिक घरानों से सहयोग की अपील की जाती है। कृपया दिल खोलकर दान दें।

अपनी दानराशि का सहयोग **"दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा"** के नाम चैक/बैंक ड्राफ्ट के माध्यम से भेजें अथवा निम्नांकित बैंक खाते में सीधे जमा कराएं। स्कैन कोड द्वारा भी दान राशि प्रदान की जा सकती है। कृपया दान राशि जमा कराते ही डिपोजिट स्लिप/स्क्रीन शॉट **9540040388** पर व्हाट्सएप्प भेजें, जिससे आपको तत्काल दान की रसीद भेजी जा सके।

Delhi Arya pratinidhi Sabha
A/c No. 910010008984897 IFSC:UTIB0002193
Axis Bank, Connaught Place, New Delhi

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा को दिया गया दान 80जी के अन्तर्गत आयकर मुक्त है।

आर्यसमाज सार्द्ध शताब्दी अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन, दिल्ली

भव्य स्मारिका का प्रकाशन : वैदिक विद्वानों, लेखकों एवं चिन्तकों महानुभावों से निवेदन

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के 200वें जयन्ती वर्ष एवं 150वें आर्यसमाज स्थापना वर्ष के आयोजनों -ज्ञान ज्योति महोत्सव के समापन के रूप में आयोजित **'आर्यसमाज सार्द्ध शताब्दी अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मलेन, दिल्ली- 2025'** के अवसर पर प्रकाशित होने वाली **भव्य स्मारिका हेतु** वैदिक विद्वानों, लेखकों एवं चिन्तकों से आर्य समाज के अनछुए विषयों, समसामयिक विषयों एवं आर्य जगत की महान विभूतियों जिनके कार्यो को आजतक किसी ने नहीं जाना-पहचाना उनकी स्मृतियों को दृष्टिगत रखते हुए लेख आमन्त्रित किए जाते हैं।

इस सम्बन्ध में समस्त वैदिक विद्वानों, लेखकों एवं चिन्तकों महानुभावों से निवेदन है कि अपने लेख ए-4 पेपर पर बाएं साईड में कम से कम 2 इंच का हाशिया छोड़कर स्पष्ट अक्षरों में लिखकर या टाईप कराकर निम्न पते पर भेजें या ईमेल करें।

स्मारिका संयोजक
आर्यसमाज सार्द्ध शताब्दी अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन, दिल्ली-2025
15, हनुमान रोड, नई दिल्ली- 110001 **Email:aryasabha@yahoo.com**

आर्यसमाज सार्द्ध शताब्दी अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन, दिल्ली-2025

भव्य स्मारिका का प्रकाशन

समस्त आर्यजनों, संस्थाओं/आर्य समाजों/पारिवारों से विज्ञापन सहयोग आमन्त्रित

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन - 2025 दिल्ली के अवसर पर भव्य स्मारिका का प्रकाशन किया जाएगा। इस स्मारिका के लिए समस्त आर्यजनों, संस्थाओं, आर्यसमाजों एवं आर्य परिवारों से विशेष विज्ञापन सहयोग आमन्त्रित किए जाते हैं। यदि आप अपना कोई शुभकामना सन्देश विज्ञापन, अपनी संस्था/आर्य समाज की जानकारी अथवा अपने माता-पिता, सगे-सम्बन्धी का परिचय या अपने परिवार के सम्बन्ध में सामग्री प्रकाशित करवाना चाहते हैं तो विज्ञापन के रूप में अपनी पारिवारिक पृष्ठभूमि और कार्य का परिचय दे सकते हैं। विज्ञापन दरें इस प्रकार हैं-

1. पूरा पृष्ठ (रंगीन)	50,000/-	2. आधा पृष्ठ (रंगीन)	25,000/-
3. पूरा पृष्ठ (B/W)	30,000/-	4. आधा पृष्ठ (B/W)	15,000/-
5. आवरण (अन्दर) (रंगीन-पृष्ठ 2-3)	2,50,000/-	6. अन्तिम आवरण (रंगीन-पृष्ठ 4)	2,50,000/-

विज्ञापन प्रकाशित कराने या अधिक जानकारी के लिए **'स्मारिका संयोजक'**, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001 को लिखें/9311721172 पर सम्पर्क करें या aryasabha@yahoo.com पर ई-मेल करें। **- संयोजक**

प्रत्येक आर्यसमाज एवं आर्यजन करें प्रचार

समस्त आर्यसमाजों एवं आर्यजनों अनुरोध है कि सार्द्ध शताब्दी अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन की तिथियां नोट करें ले और सोशल मीडिया तथा प्रिंट मीडिया के प्रत्येक प्लेटफार्म पर इसका प्रचार करें। आर्यसमाजें अपने साप्ताहिक सत्संगों में नियमित रूप से इसकी सूचना दें, अपने आर्यसमाज की बैठक आमन्त्रित करें और समिति गठित करें तथा समाज के प्रत्येक सदस्य को सपरिवार पहुंचने के लिए प्रेरित करें। इस अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन को भव्य, विराट एवं ऐतिहासिक बनाने में आप सबका सहयोग सादर अपेक्षित है। ***ज्ञान ज्योति महोत्सव आयोजन समिति***

साप्ताहिक
आर्य सन्देश

सोमवार 25 अगस्त, 2025 से रविवार 31 अगस्त, 2025
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं. डी.एल.(एन.डी.)-11/6071/2024-25-2026
LPC, DRMS, दिल्ली-6 में पोस्ट करने की तिथि 28-29-30/08/2025 (वीर-शुक्र-शनिवार)
पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं. यू. (सी.) 139/2024-25-26
आर.एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 27 अगस्त, 2025

आर्यसमाज के 150वें स्थापना वर्ष के अवसर पर कुछ अति विशेष प्रकाशन

आइए, साहित्य प्रकाशन में सहभागी और सहयोगी बनें

प्रतिष्ठा में,

मैं आर्य समाजी कैसे बना ?

इस विषय में सभी आर्यजन अपने या अपने परिवार के पहले पहल आर्यसमाजी बनने की रोचक घटना और कारण को लिखकर अवश्य भेजें। सर्वश्रेष्ठ 150 घटनाओं की ऐतिहासिक पुस्तक का प्रकाशन किया जाएगा। रचना अधिकतम 500 शब्दों में ही लिखकर भेजें।

आर्य समाजी जेलों में

इस पुस्तक में उन सभी नामों का संकलन करने का विचार है, जो आजादी के आन्दोलन में, हैदराबाद सत्याग्रह में, हिन्दी सत्याग्रह में, गौराक्षा आन्दोलन में, सिन्ध सत्यार्थ प्रकाश सत्याग्रह, पटियाला केस आदि में समर्पित महानुभाव - जिनको किसी भी सज्जन का नाम पता लगे-किस जेल में गए थे- किस कारण से गए थे तो शीघ्र ही अवश्य लिखकर भेजें।

आर्य समाज Today

वर्तमान आर्य समाज की संस्थाओं की सटीक जानकारी एक स्थान पर एकत्र करने हेतु। इस विशेष प्रकाशन को किया जा रहा है, इससे पूर्व आर्य संस्थाओं से जुड़ी जानकारियों का प्रकाशन शताब्दी समारोह के समय किया गया था। समस्त आर्य समाजें अपने समाज की गतिविधियों सहित विशेष जानकारियां अवश्य भेजें।

संस्मरण एवं श्रद्धांजलि

अपने आत्मीय महानुभावों का स्मरण, अपने पूज्य माता-पिता/गुरु/आचार्य जिन्होंने आपके जीवन में आर्यसमाज का प्रकाश करने में सर्वाधिक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उनको श्रद्धांजलि देते हुए परिचय फोटो सहित। ये प्रकाशन सहयोग राशि के साथ होगा। इसका एक भाग लगभग - 400 पृष्ठ का होगा।

एक पृष्ठ पर एक परिचय 5000/- रूपये की अल्प राशि से प्रकाशित होगा - दो प्रतियां नि:शुल्क दी जाएंगी।

ज्ञान ज्योति महोत्सव आयोजन स्मारिका

महर्षि की 200वीं जयन्ती और आर्यसमाज के 150वें स्थापना दिवस के देश-विदेश में हुए विशेष आयोजनों की संक्षिप्त रिपोर्ट, फोटोग्राफ्स, प्रमुख व्यक्तियों के भाषण, विशेष घटनाएं आदि का संग्रह, प्रकाशन करना इस प्रकाशन का उददेश्य रहेगा।

आर्य समाज के 150वें स्थापना दिवस पर आर्य सन्देश विशेषांक हेतु ऐतिहासिक लेख एवं घटनाक्रमों पर आधारित प्रेरक प्रसंग अवश्य भेजें

उपरोक्त ऐतिहासिक प्रकाशनों से जुड़ी जानकारी, लेख एवं अन्य सामग्री डाक/ईमेल अथवा व्हाट्सएप्प पर शीघ्र-अतिशीघ्र भेजें-

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पं.) 15 - हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001
Email : aryasabha@yahoo.com; 9540097878

बन्धुओ, आज आर्य समाज जब महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के 200वें जयन्ती वर्ष और आर्य समाज के 150वें स्थापना वर्ष को हर्षोल्लास से मना रहा है, तब हमें कुछ विशेष पुस्तकों के प्रकाशन में बढ़-चढ़ कर आगे आना चाहिए। इसके लिये यह आवश्यक नहीं है कि आप मान्यता प्राप्त लेखक ही हों, इसके लिए आपकी केवल दृढ़ इच्छा शक्ति होनी चाहिए और आप अपनी सरल भाषा में ही निम्नलिखित विषयों पर आधारित लेख, ऐतिहासिक तथ्य, आर्य समाज की संस्थाओं के विषय में जानकारी, संस्मरण एवं श्रद्धाजंलि तथा ज्ञान ज्योति महोत्सव आयोजन स्मारिका, आर्य सन्देश विशेषांक में लेख आदि का सहयोग करके सहभागी बने।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा विद्या दर्शन ऑफसैट प्रिंटर्स, यूनिट नं.-21, प्रधान कॉम्प्लेक्स, मेन रोड मंडावली, दिल्ली-92 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-1; फोन : 23360150; 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com; Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित
सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह